PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 4, ISSUE 4

प्रतिभा पलायन

सरोज बाला

शोध छात्रा

राजस्थान वि"वविधालय

जयपुर राजस्थान। भारत।

पडित जवाहर लाल नेहरु ने एक बार कहा था

किसी भी दे"ा का भविष्य उस दे"ा के युवाओं के कन्धों पर टिका होता है

आज हम जिन युवाओं की बात कर रहें हैं वो कोई नई बात नही है क्योंकि युवा शब्द तो समाज के जन्म से ही अस्तित्व में है और ये युवाओं की शक्ति है जिनके बल पर आज हम आजादी की हवाओं में सांस ले रहें हैं। अगर हमारे युवा बहुत पहले ही दे"ा से पलायन कर जाते तो शायद आज हम इस मधुर कल कल करती ध्वनि की आजाद पंखुडियों में सांस नही ले पाते। आज भी हम गुलामी में जकडे. हुए होते। कहने का मतलब है कि पुराने जमाने कि तरह आज भी हमें प्रतिभाओं को दे"ा में संरक्षण देने की आव"यकता है। अगर इसी तरह पलायन जारी रहा तो वो दिन दूर नहीं जब हमें छोटी सी बिमारी के लिए विदे"ाों की और भागना पडेगा और आज हम जो सर्जिकल सटराईक कर दू"मन को मात दे रहें है वो भी सब फेल हो जाएगा। ये प्रतिभाओं को ही सलााम है कि वो किस तरह से दू"मन के घर में घूसकर इस घटना को अन्जाम दिया। आज हमने जो प्रगति की है चाहे उपग्रहों की स्थापना में यानि विज्ञान के क्षेत्र में हो या डाक्टरी के क्षेत्र में सब हमारे युवाओं की प्रतिभा का ही कमाल है।

प्रतिभा पलायन शब्द दो शब्दों प्रतिभा और पलायन से मिलकर बना है जिसका अर्थ है किसी दे"ा के बुद्विमान व्यक्तियों का किसी अन्य दे"ा में कोई कार्य या ि"ाक्षा के लिए जाना और फिर वहीं पर अपना स्थायी निवास बना लेना। 1960 के द"ाक में यह शब्द"ा सामने आया। पिछले कुछ दिनों से यह स्थिति एक गम्भीर रुप लेती जा रही है और बडे पैमाने पर हमारे युवा साथी विदे"ाों की और पलायन करते जा रहे हैं। शुरुआती दौर में तो यह एक फै"ान के रुप में सामने आया किन्तु धीरे धीरे यह एक कैंसर का रुप लेता जा रहा है। आज हमारे दे"ा की आधी के लगभग आबादी विदे"ाों की ओर पलायन कर रही है और यह अभी तक जारी है।यूएनओ की एक रिपोर्ट के अनुसार प्रतिवर्ष एक लाख से ज्यादा युवा पलायन कर जाते हैं। सवाल ये उठता है आखिर क्यों हमारे युवा लोग विदे"ाों की ओर पलायन

कर रहें हैं? क्यों हमारे नेता लोग अभी भी दे"ा में वो आधारभुत सुविधाएं नही दे पा रहे जिनकी वजह से हमारे दे"ा की प्रतिभाएं विदे"ाों की ओर कूच कर रही हैं। क्यों भारत की सरकार चुप बैठी है? क्यों वह प्रतिभाओं को समान नहीं दे रही जितना उनकों विदे"ाों में मिल रहा है? क्यों युवाओं की पसंद विदे"ाी ि"ाक्षा और वहां नौकरी की हो रही है? इन सभी सवालों के लिए कोई एक कारण नहीं बल्कि अनेकों कारण उतरदायी है।

प्रतिभा पलायन के कारण...

1 बेरोंजगारी की समस्या...

काफी समय से ही हमारे दे"ा में बेरोजगारी की समस्या विकट रुप धारण करती जा रही है। ये सही है कि हमारे पास प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है परन्तु हमारे दे"ा की आधी से भी ज्यादा प्रतिभाए प्रति वर्ष पलायन कर जाती है क्योकि एक तो यहां रोजगार नहीं मिलता और दूसरा यहां बेरोजगारी भी इतानी बढ चुकी है कि सौ व्यतियों के रिक्त पदो के लिए भी एक लाख से ज्यादा आवेदन मिलते है। इसका उदाहरण हाल ही में राजस्थान पटवार भर्ती परीक्षा में देखा भी गया है।इसी तरह केरल तमिलनाडु महाराष्ट आदि में ि"ाक्षित बेरोजगारों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है।लाखों पीएचडी धारक आज चपरासी के लिए आवेदन कर रहे है जबकि विदे"ाों में उनकों अच्छी खासी नोकरी मिल जाती है। हमारे यहा मौसमी व छिपी हुई बरोजगारी ज्यादा पाई जाती है जिसको दूर करना काफी जरुरी है। 70 प्रति"ात आबादी कृषि कार्यो में लगी हुई और वर्ष के छह महिने में ये लोग खाली रहते हैं। अतः इस पृच्छन्द बेरोजगारी को दूर करना काफी आव"यक है।

2 दोषपूर्ण ि"ाक्षा प्रणाली....

हमारी ि"ाक्षा व्यवस्था आज भी उसी अंग्रेज जनीत मैकाले की ि"ाक्षा प्रणाली को अनुसरण कर रही है जिसका उदे"य केवल और केवल सस्ते बाबू पैदा करना था।प्रति वर्ष पंचवर्षीय योजनाएं बनाई जाती है किन्तु वो भी ि"ाक्षा के लक्ष्य को प्राप्त नही कर पाई हैं। हमारे यहा लाखों पीएचडी धारक मिल जाएगें किन्तु वो भी बेरोजगार। दूसरी ओर विदे"ाों में ि"ाक्षा रोजगार परक उपलब्ध करवायी जाती है। उनके बीए पास हमारे पीएचडी पास को भी फेल करता है क्योंकि विदे"ाी लोगों को कौ"ाल विकास सिखाया जाता है उनको बाबू बनना नहीं।

3 कम वेतन की समस्या...

विदे"ाों में एक छोटी से छोटी नोकरी के लिए अच्छा वेतन दिया जाता है जिससे हमारे युवा की पसन्द विदे"ा में बसना बनती जा रही है। उदाहरण के लिए जिस क्लर्क को हमारे यहा दस हजार दिये जाते है उसी को वहां चालिस हजार मिलते है इसलिए मोटी रकम हमारे युवाओं को लुभाती है और वो यहां से पलायनवादी बनते जा रहे हैं।

4 व्यवसायों में अनि"चता

.अभी कुछ समय से हम देखते आ रहें हैं कि हमारे यहां की नौकरियों में भी स्थाईत्व नहीं रहा। उदाहरण के लिए हरियाणा में कुछ समय पहले मेरे दोस्त को अध्यापक की नौकरी मिली सब बहुत खु"ा हुए किन्तु दो साल बाद सरकार बदली और उसकी छुटी कर दी गई। आज वह भी अमेरिका में मैनेजर है। ऐसे पूरे दे"ा में भी देखा जा सकता। इससे युवाओं का मनोबल गिरता है और वो विद"ोां की ओर दौड.ते हैं।

5 वि"वविधालयों की गुणवता में सन्देह

.यह सही है कि आज भी हमारे यहां कई अच्छे वि"वविध्यालय खुल चुके है जो मोटी मोटी रकम के नाम पर छात्रों का भविष्य धूमिल करने पर तुले हैं। मैने खुद भी ऐसे किसी वि"वविधालय में प्रवे"ा लेकर देखा भी है परन्तु वहां गुणवता के नाम पर कुछ भी नही है सिवाय ऐसी कमरों व कुलरों के। अगर ये छात्रों कें भविष्य से खिलवाड. नही तो और क्या हो सकता।

6 रोजगारी परक वि"वविधालयों की कमी...

आज हमारें पास प्राचीन काल जैसे नालन्दा व तक्षि"ाला जैसे वि"वविधालयों की कमी है जो छात्रों में न केवल अच्छी ि"ाक्षा बल्कि उनका नैतिक विकास भी करते थे और तब प्रतिभा पलायन विदे"ाों से यहां होता था। विदे"ाी छात्र यहां आते थे न की हम विदे"ा जाते थे।

7 राजनैतिक कारण

प्रतिभा पलायन के पिछे एक बहुत बड.ा कारण शायद राजनैतिक विचारधारा भी रही है। आज सभी पार्टियां आती और अपना अपना कोटा पूर्ण करके चली जाती हैं। कोई एक नेता भी ये नही देखता की प्रति वर्ष हमारे दे"ा से कितने युवा पलायन कर जाते है और क्यों ?..ये भी नही देख पा रहे की भारत में जीडीपी का कितना युवा विकास पर खर्च होना चाहिए।

8 अवसरों की कमी...

आज के युवाओं की पसन्द ऐसी जगह होती है जहां उनकों विकास के बैहतर अवसर अवसर मिल सकें और हमारे दे"ा में युवाओं को वो सुविधाएं नही मिल पा रही हैं जो विद"ोां में। उदाहरण के लिए दे"ा में रोजगार के लिए कम अवसर और अच्छे ि"ाक्षण संस्थओं की कमी व सुरक्षित वातावरण की कमी आदि।

प्रतिभा पलायन को रोकने के लिए निम्न उपायों को अमल में लाया जा सकता है...

रोजगार परक ि"ाक्षा व्यवस्था.....

सबसे पहले हमारे दे"ा में ि"ाक्षा व्यवस्था में सुधार की जरुरत है। ि"ाक्षाविदों को इस विषय में गहराई से विचार करने की जरुरत है कि ि"ाक्षा को बारहवीं से ही रोजगार परक बनाया जाए ताकि

युवाओं को रोजगार मिल सके और वो विदे”ाों की और कूच ना करें। हमें सस्ते बाबू पैदा करने वाली ि”ाक्षा नही चाहिए बल्कि शक्ति”ााली बाबू पैदा करने वाली ि”ाक्षा चाहिए।

2 गुणवतापूर्ण ि”ाक्षा व्यवस्था वाले वि”वविधालय.

दूसरी और हमारे यहां आजादी के बाद से जितने वि”वविधालयों में वृद्धि हुई है इतनी शायद विदे”ाों में भी ना हो पायी किन्तु इन सब की गुणवता विदे”ाों के सौ वर्ष पुराने वि”वविधालय के बराबर भी नहीं। उदाहरण के लिए आज भी सबसे पुराना वि”वविधालय आक्सफोर्ड व कैम्ब्रीज टोप पर है और हमारा एक भी टोप बीस में भी नहीं। ऐसा क्यों ? अतः आव”यकता है अच्छे वि”वविधालयों में वृद्धि की व फीस को भी कम करने की ताकि प्रतिभा पलायन को रोका जा सके।

3 वेतन वृद्धि को बढाना

छात्रों के हित को ध्यान में रखकर वेतन को भी बढाया जाना चाहिए ताकि युवा अधिक वेतन की चाहत में विदे”ाों की और पलायन ना करें। यह सही है कि अभी सरकार ने सेवन वेतन की घोषणा की है किन्तु सबसे कम वेतन वाली पोस्ट को भी और अभी सुधारने की जरुरत है ताकि पैसों के चक्कर में प्रतिभा बाहर ना जाए। आज मंहगाई इतनी बढ. गई है कि प्रत्येक कार्य के लिए पैसों की जरुरत महसूस होती है और युवाओं को कम वेतन में कार्य करना बूरा लगता हैं।

4 शौध कार्यो को बढावा.

हमारे दे”ा के दस प्रति”ात से भी अधिक छात्र विदे”ाी जगहों पर रिसर्च के लिए जाते है और वहीं के बन जाते है इसलिए दे”ा में ही ऐसी परिस्थितियां पैदा की जाए की छात्रों को शौध के लिए विद”ाों में ना जाना पडे. और प्रतिभा का अपने ही दे”ा में उचित उपयोग किया जा सके।

5 लघू व कुटीर उघोगों में वृद्धि.

दे”ा के अन्दर ही रोजगार पैदा करने के लिए सरकार को लघु उधोगों में वृद्धि करना चाहिए ताकि अधिकतर लोगों को काम की तला”ा में बाहर नही जाना पडे. और उनकी मानसिकता भी विदे”ाी ना होकर भारतीय ही बनी रहे। विदे”ाों में वही पर लोगों को ऐसे उधोगों में काम मिल जाने से वो हमारें यहां नही आते। हालाकि वर्तमान सरकार इस विषय में कार्यरत भी है।

6 उचित प्रि”ाक्षण का प्रावधान..

दे”ा के अन्दर ही युवाओं के प्रि”ाक्षण का उचित प्रावधान किया जाना चाहिए जैसे इंजीनियरों को प्रि”ाक्षण व डाक्टरों को प्रि”ाक्षण; कलाकारों को प्रि”ाक्षण आदि ताकि इनके उपर लगने वाला पैसा भी दे”ा में ही निवे”ाित हो और दे”ा के ही काम आये।

7 सरकारी स्तर पर प्रयास

यह ठीक है कि युवाओं को अपने दे"ा के लिए हमें"ाा दे"ाभक्ति की भावना रखनी चाहिए किन्तु सरकार को भी इस स्तर पर ध्यान देना चाहिए। जैसे जीडीपी में वृद्धि। यानि ि"ाक्षा पर जीडीपी में वृद्धि करनी चाहिए ताकि युवाओं को अपने दे"ा में ही नौकरी के बेहतर अवसर मिल सके और बाहर जाने की नौबत ही ना आये।दूसरी और सबसिडी भी दी जानी चाहिए। युवाओं को उचित अवसर व प्रि"ाक्षण आदि आदि।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि किसी भी दे"ा के युवा उस दे"ा की सबसे अमूल्य धरोहर होती है और यदि वो धरोहर ही वहां से पलायन करने लग जाये तो दे"ा अव"य ही खोखला हो जाता है। अतः इस धरोहर को बचाने के लिए कोई भी एक कार्य करना बेमानी होगी । इसलिए उपर बताये गये सभी कारणों को जानकर सुधार करने की आव"यकता है। हमारे युवाओं का विदे"ाों में जाकर उच्च ि"ाक्षा पाना कोई बुरी बात नही है क्योंकि प्राचीन समय में भी हैन्सांग व सिलभद्रा जैसे प्रखर बुद्धि वालों लोगों ने भी हमारे यहां यात्राएं की और काफी समय तक यहां रहकर अपने ज्ञान में को बढ.ाया था किन्तु हमें उसे उनके दे"ा की तरफ से प्रतिभा पलायन नही कहना चाहिए क्योंकि उन्होंने यहां रहकर जो सिखा वो अपने दे"ा में जाकर प्रयोग किया। हमारे यहां सब उल्टा हो रहा जो प्रतिभाएं उच्च ि"ाक्षा के लिए विदे"ा जाती है वो वहीं की होकर रह जाती। बस इसी समस्या को रोकना होगा। आज हमने विज्ञान. इंजीनियरिगं .डोक्टरी आदि में जो प्रगति की है वो इन्ही प्रतिभओं का कमाल है। हम पृथ्वी ही नहीं मंगल पर भी कदम रख चुके है और कुछ समय पूर्व हमने एक साथ बीस उपग्रह लांच कर दिखा भी दिया की हमारी प्रतिभाएं विदे"ाों से भी आगे है बस अवसरों की कमी खलती है। अब जरुरत उन अवसरों को खोजकर और क्रियान्वित करने की है ताकि आने वाले समय में हम न केवल विकाससिल दे"ा बल्कि एक विकसित दे"ा के रुप में पहचाने जाये और आज तो हमने बस सर्वाइक्ल सटराईक की झलक भर दिखलाई है वो हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में छा जाये। ये तभी सम्भव होगा जब युवा शक्ति साथ होगी और युवा तभी होगें जब हम हमारी प्रतिभाओं को विदे"ा में जाने से रोक पायेंगे। ऐसा तभी सम्भव होगा जब न केवल हम दे"ा भक्ति भावना का आदर कर दे"ा में ही रहें बल्कि हमारी सरकार भी इस दि"ाा में ठोस कदम उठाये। अगर सरकार कुल जीडीपी का थोड.ा का भी युवाओं पर खर्च कर दे तो आज हमारे दे"ा को एक वर्ष में इतना लाभ हो सकता है जितना शायद आने वाले दस सालों में भी ना हो।

मेरे विचार से प्रतिभा पलायन को रोकना कोई ज्यादा मु"ाकिल नहीं क्योंकि एक कवि ने कहा है...

कौन कहता है आसमान में छेद नहीं होता

एक पत्थर को तहे दिल से फेंक कर तो देखों।।

संदर्भ

1 प्रतिभा पलायन की समस्या - अ"ोक पांडे

2 प्रतिभा पलायन एक सोच - मोहनदास गुप्ता

3 विदे"ाों की ओर दौड. - सीमा शार्मा

4 प्रतिभा पलायन एक नई चुनौती - दे"ापांडे

5 दे"ा की चिंता बढ.ती प्रतिभा पलायन की समस्या डेविड इसिंटन